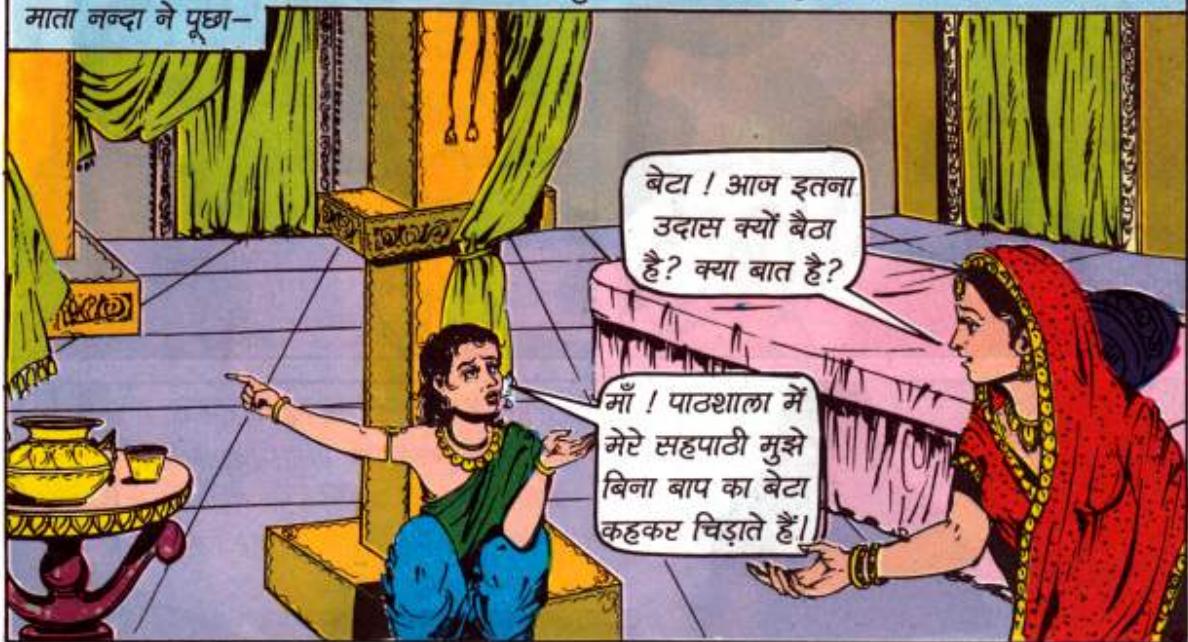


बुद्धि निधान अभ्य कुमार

दाजा श्रेष्ठिक और नन्दा का पुत्र अभ्यकुमार पाठशाला में आचार्यों की प्रशंसा का पात्र होने के कारण सहपाठी उससे ईर्ष्या करने लगे थे। उसे नीचा दिखाने के लिए “बिना बाप का बेटा” कहकर चिड़ाना प्रारम्भ कर दिया। इस अपमान से तिलमिलाया हुआ अभ्य उदास होकर घट में बैठा था तभी उसकी माता नन्दा ने पूछा—



यह सुनकर नन्दा एकदम तड़फ उठी।





अभ्य ने अपनी माँ के विचारों का मतलब समझ लिया।

ठीक है माँ। हम सीधे दाजगृह न जाकर वहाँ पास के किसी ग्राम में रहेंगे और वहाँ कुछ ऐसा काम करेंगे कि पिताजी स्वयं चलकर आयें और हम दोनों को ही सम्मानपूर्वक दाजगृह ले जायें।

नन्दा को अपने पुत्र की विलक्षण बुद्धि पर विश्वास था। उसने अभ्य के साथ चलने की स्वीकृति दे दी।

अभ्य कुमार और नन्दा कई दिन की यात्रा के बाद दाजगृह के समीप नन्दीग्राम में पहुँचे।

माँ, हम कुछ दिन यहाँ रहेंगे।

माता को साथ लेकर अभ्य एक अच्छी धर्मथाला में आकर ठहर गया। नहा-धोकर अच्छे कपड़े पहनकर वह गांव की तरफ निकला।

वहाँ भीड़ क्यों लगी है? चलकर देखना चाहिए।